वाजश्रवा का सर्वमेध यज्ञ

ॐ उशन् ह वै वाजश्रवस: सर्ववेदसं ददौ। तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस्॥ १॥

अर्थ – प्रसिद्ध है कि परम सुख की इच्छा रखने वाले वाजश्रवा ऋषि के पुत्र वाजश्रवस अर्थात उद्दालक ने विश्वजित् यज्ञ में अपने सम्पूर्ण धनादि पदार्थों को दान में दे दिया। प्रसिद्ध है कि उसके पुत्र का नाम नचिकेता था।

पदच्छेद – उशन्। ह। वै। वाजश्रवस:। सर्ववेदसं। ददौ। तस्य। ह। नचिकेता। नाम। पुत्र:। आस्।

शब्दार्थ- उशन् = अभिलाषा करने वाला । कामयमान:।

(ह। वै।) = ये दोनों निपात हैं जिनका अर्थ है- 'प्रसिद्ध है'।

वाजश्रवस: = वाजश्रवा की संतान।

इस नाम का अर्थ है कि 'जिसकी वाज (अन्न) से श्रव (कीर्त्ति) है वह वाजश्रवा है, अन्न से कीर्त्ति का अर्थ अन्नदान से प्राप्त कीर्त्ति - वाजमन्नं तद्दानादिनिमित्तं श्रवो यशो वा यस्य स: वाजश्रवा:। वाजश्रवा की संतान का नाम वाजश्रवस् है। वाजश्रवस् का अन्य नाम उद्दालक भी है।

सर्ववेदसं = सर्वस्वं धनं अर्थात सम्पूर्ण धन।

ददौ = दे दिया, प्रथम पुरुष, एकवचन, लिट्लकार।

तस्य = उसके, वाजश्रवस: उद्दालकस्य । ह = प्रसिद्ध इति ।

नचिकेता = उद्दालकस्य पुत्रस्य नाम इति

आस् = था, प्रथम पुरुष, एकवचन, लिट्लकार।

तं ह कुमारं सन्तं दक्षिणासु नीयमानासु श्रद्धाविवेश सोऽमन्यत ॥ २॥

अर्थ – यह प्रसिद्ध है कि ऋत्विजों के द्वारा दक्षिणा में ले जाते हुए (जराजीर्ण उन गौओं को) देखकर कुमारावस्था में विद्यमान उस नचिकेता के हृदय में आस्तिकता रूप बुद्धि प्रविष्ट हुई। उस नचिकेता ने मन में सोचा कि-

पदच्छेद – तम्। ह। कुमारम्। सन्तम्। दक्षिणासु। नीयमानासु। श्रद्धा। आविवेश। सः। अमन्यत।

शब्दार्थ- ह = प्रसिद्ध है
दक्षिणासु = दान में
नीयमानासु = ले जाती हुई √नीञ्+शानच्
कुमारम् = कुमारावस्था में
सन्तम् = होता हुआ √अस्+शतृ
तम् = उसको
श्रद्धा = श्रद्धा, आस्तिक्यबुद्धिः
आविवेश = प्रविष्ट हुई । आ+√विश् लिट्लकार, प्रथम पुरुष, एकवचन
सः = वह
अमन्यत = सोचा, √मान् लङ्लकार प्रथम पुरुष, एकवचन

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिंद्रियाः ।
अनन्दा नाम ते लोकास्तान् स गच्छति ताः ददत् ॥ ३ ॥

अर्थ – जो यजमान, जलपान कर चुकी हुई, घास आदि खा चुकी हुई तथा जिनका दूध दुहा जा चुका है और जो इंद्रियरहित हो चुकी हैं, उन (गायों) का दान करता है; वह यजमान आनंद से रहित लोकों को प्राप्त होता है।

जलपान कर चुकी का अर्थ है कि जिनमें जल पीने की भी शक्ति शेष नहीं है। घास खा चुकी का अर्थ है कि जिनमें खाने की भी शक्ति शेष नहीं है। दूध दुहा जा चुका का अर्थ है कि जो दूध देने में असमर्थ हैं। इंद्रियरहित होने का अर्थ है कि जो संतान उत्पन्न करने में असमर्थ हैं। ये पदसमूह गायों के विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं। ऐसी गायों के दान को निकृष्ट माना गया है। इस प्रकार के दान से पुण्य तो प्राप्त नहीं ही होता बल्कि दानकर्त्ता वैसे लोकों को प्राप्त करता है जो आनंद से हीं हैं।

पदच्छेद – पीतोदका:। जग्धतृणा:। दुग्धदोहा:। निरिंद्रिया:। अनन्दा:। नाम। ते। लोका:। तान् । स:। गच्छति।ता:। ददत्।

शब्दार्थ-

पीतोदका: = पीतमुदकम् याभिस्ता: पीतोदका:
जग्धतृणा: = जग्धं भक्षितं तृणं याभिस्ता
दुग्धदोहा: = दुग्धो दोह: क्षीराख्यो यासां ता दुग्धदोहा:
निरिंद्रिया: = अप्रजननसमर्था जीर्णा निष्फला गाव इत्यर्थ:
अनन्दा: = न नन्दयतीति अनन्दा:
नाम = अभिधानमिति
ते लोका: = तत् और लोक शब्द, प्रथमा बहुवचन
तान् = तत् , द्वितीया बहुवचन
स: = तत्, प्रथमा एकवचन पुल्लिंग
गच्छति = √गम् लट्लकार प्रथम पुरुष एकवचन
ता: = तत् , द्वितीया बहुवचन
ददत् = √दा+शतृ